

पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय

22-फरवरी-2016 19:28 IST

वाराणसी के बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के शताब्दी वर्ष दीक्षांत समारोह में प्रधानमंत्री के संबोधन का मूल पाठ

सभी विद्यार्थी दोस्तों और उनके अभिभावकों, यहां के सभी faculty के members, उपस्थित सभी महानुभाव!

दीक्षांत समारोह में जाने का अवसर पहले भी मिला है। कई स्थानों पर जाने का अवसर मिला है लेकिन एक विश्वविद्यालय की शताब्दी के समय दीक्षांत समारोह में जाने का सौभाग्य कुछ और ही होता है। मैं भारत रत्न महामना जी के चरणों में वंदन करता हूं कि 100 वर्ष पूर्व जिस बीज उन्होंने बोया था वो आज इतना बड़ा विराट, ज्ञान का, विज्ञान का, प्रेरणा का एक वृक्ष बन गया।

दीर्घदृष्टा महापुरुष कौन होते हैं, कैसे होते हैं? हमारे कालखंड में हम समकक्ष व्यक्ति को कभी कहें कि यह बड़े दीर्घदृष्टा है, बड़े visionary है तो ज्यादा समझ में नहीं आता है कि यह दीर्घदृष्टा क्या होता है visionary क्या होता है। लेकिन 100 साल पहले महामना जी के इस कार्य को देखें तो पता चलता है कि दीर्घदृष्टा किसे कहते हैं, visionary किसे कहते हैं। गुलामी के उस कालखंड में राष्ट्र के भावी सपनों को हृदयस्थ करना और सिर्फ यह देश कैसा हो, आजाद हिंदुस्तान का रूप-रंग क्या हो, यह सिर्फ सपने नहीं है लेकिन उन सपनों को पूरा करने के लिए सबसे प्राथमिक आवश्यकता क्या हो सकती है? और वो है उन सपनों को साकार करे, ऐसे जैसे मानव समुदाय को तैयार करना है। ऐसे सामर्थ्यवान, ऐसे समर्पित मानवों की श्रृंखला, शिक्षा और संस्कार के माध्यम से ही हो सकती है और उस बात की पूर्ति को करने के लिए महामना जी ने यह विश्वविद्यालय का सपना देखा।

अंग्रेज यहां शासन करते थे, वे भी यूनिवर्सिटियों का निर्माण कर रहे थे। लेकिन ज्यादातर presidencies में, चाहे कोलकाता है, मुंबई हो, ऐसे स्थान पर ही वो प्रयास करते हैं। अब उस प्रकार से मनुष्यों का निर्माण करना चाहते थे, कि जिससे उनका कारोबार लंबे समय तक चलता रहे। महामना जी उन महापुरुषों को तैयार करना चाहते थे कि वे भारत की महान परंपराओं को संजोए हुए, राष्ट्र के निर्माण में भारत की आजादी के लिए योग्य, सामर्थ्य के साथ खड़े रहे और ज्ञान के अधिष्ठान पर खड़े रहें। संस्कारों की सरिता को लेकर के आगे बढ़े, यह सपना महामना जी ने देखा था।

जो काम महामना जी ने किया, उसके करीब 15-16 साल के बाद यह काम महात्मा गांधी ने गुजरात विद्यापीठ के रूप में किया था। करीब-करीब दोनों देश के लिए कुछ करने वाले नौजवान तैयार करना चाहते थे। लेकिन आज हम देख रहे हैं कि महामना जी ने जिस बीज को बोया था, उसको पूरी शताब्दी तक कितने श्रेष्ठ महानुभावों ने, कितने समर्पित शिक्षाविदों ने अपना ज्ञान, अपना पुरुषार्थ, अपना पसीना इस धरती पर खपा दिया था। एक प्रकार से जीवन के जीवन खपा दिये, पीढ़ियां खप गईं। इन अनगिनत महापुरुषों के पुरुषार्थ का परिणाम है कि आज हम इस विशाल वट-वृक्ष की छाया में ज्ञान अर्जित करने के सौभाग्य बने हैं। और इसलिए महामना जी के प्रति आदर के साथ-साथ इस पूरी शताब्दी के दरमियान इस महान कार्य को आगे बढ़ाने में जिन-जिन का योगदान है, जिस-जिस प्रकार का योगदान है जिस-जिस समय का योगदान है, उन सभी महानुभावों को मैं आज नमन करता हूं।

एक शताब्दी में लाखों युवक यहां से निकले हैं। इन युवक-युवतियों ने करीब-करीब गत 100 वर्ष में दरमियान जीवन के किसी न किसी क्षेत्र में जा करके अपना योगदान दिया है। कोई डॉक्टर बने हुए होंगे, कोई इंजीनियर बने होंगे, कोई टीचर बने होंगे, कोई प्रोफेसर बने होंगे, कोई सिविल सर्विस में गये होंगे, कोई उद्योगकार बने हुए होंगे और भारत में शायद एक कालखंड ऐसा था कि कोई व्यक्ति कहीं पर भी पहुंचे, जीवन के किसी भी ऊंचाई पर पहुंचे जिस काम को करता है, उस काम के कारण कितनी ही प्रतिष्ठा प्राप्त क्यों न हो, लेकिन जब वो अपना परिचय करवाता था, तो सीना तानकर के कहता था कि मैं BHU का Student हूं।

मेरे नौजवान साथियों एक शताब्दी तक जिस धरती पर से लाखों नौजवान तैयार हुए हो और वे जहां गये वहां BHU से अपना नाता कभी टूटने नहीं दिया हो, इतना ही नहीं अपने काम की सफलता को भी उन्होंने BHU को समर्पित करने में कभी संकोच नहीं किया। यह बहुत कम होता है क्योंकि वो जीवन में जब ऊंचाइयां प्राप्त

करता है तो उसको लगता है कि मैंने पाया है, मेरे पुरुषार्थ से हुआ, मेरी इस खोज के कारण हुआ, मेरे इस Innovation के कारण हुआ। लेकिन ये BHU है कि जिससे 100 साल तक निकले हुए विद्यार्थियों ने एक स्वर से कहा है जहां गये वहां कहा है कि यह सब BHU के बदौलत हो रहा है।

एक संस्था की ताकत क्या होती है। एक शिक्षाधाम व्यक्ति के जीवन को कहां से कहां पहुंचा सकता है और सारी सिद्धियों के बावजूद भी जीवन में BHU हो सके alumni होने का गर्व करता हो, मैं समझता हूं यह बहुत बड़ी बात है, बहुत बड़ी बात है। लेकिन कभी-कभी सवाल होता है कि BHU का विद्यार्थी तो BHU के गौरव प्रदान करता है लेकिन क्या भारत के कोने-कोने में, सवा सौ करोड़ देशवासियों के दिल में यह BHU के प्रति वो श्रद्धा भाव पैदा हुआ है क्या? वो कौन-सी कार्यशैलियां आई, वो कौन से विचार प्रवाह आये, वो कौन-सी दुविधा आई जिसने इतनी महान परंपरा, महान संस्था को हिंदुस्तान के जन-जन तक पहुंचाने में कहीं न कहीं संकोच किया है। आज समय की मांग है कि न सिर्फ हिंदुस्तान, दुनिया देखें कि भारत की धरती पर कभी सदियों पहले हम जिस नालंदा, तक्षशिला बल्लभी उसका गर्व करते थे, आने वाले दिनों में हम BHU का भी हिंदुस्तानी के नाते गर्व करते हैं। यह भारत की विरासत है, भारत की अमानत है, शताब्दियों के पुरुषार्थ से निकली हुई अमानत है। लक्षाविद लोगों की तपस्या का परिणाम है कि आज BHU यहां खड़ा है और इसलिए यह भाव अपनत्व, अपनी बातों का, अपनी परंपरा का गौरव करना और हिम्मत के साथ करना और दुनिया को सत्य समझाने के लिए सामर्थ्य के साथ करना, यही तो भारत से दुनिया की अपेक्षा है।

मैं कभी-कभी सोचता हूं योग। योग, यह कोई नई चीज नहीं है। भारत में सदियों से योग की परंपरा चली आ रही है। सामान्य मानविकी व्यक्तिगत रूप से योग के आकर्षित भी हुआ है। दुनिया के अलग-अलग कोने में, योग को अलग-अलग रूप में जिज्ञासा से देखा भी गया है। लेकिन हम उस मानसिकता में जीते थे कि कभी हमें लगता नहीं था कि हमारे योग में वह सामर्थ्य हैं जो दुनिया को अपना कर सकता है। पिछले साल जब United nation ने योग को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के रूप में स्वीकार किया। दुनिया के 192 Country उसके साथ जुड़ गये और विश्व ने गौरव ज्ञान किया, विश्व ने उसके साथ जुड़ने का आनंद लिया। अगर अपने पास जो है उसके प्रति हम गौरव करेंगे तो दुनिया हमारे साथ चलने के लिए तैयार होती हैं। यह विश्वास, ज्ञान के अधिष्ठान पर जब खड़ा रहता है, हर विचार की कसौटी पर कसा गया होता है, तब उसकी स्वीकृति और अधिक बन जाती है। BHU के द्वारा यह निरंतर प्रयास चला आ रहा है।

आज जिन छात्रों का हमें सम्मान करने का अवसर मिला, मैं उनको, उनके परिवार जनों को हृदय से बधाई देता हूं। जिन छात्रों को आज अपनी शिक्षा की पूर्ति के बाद दीक्षांत समारोह में डिग्रियां प्राप्त हुई हैं, उन सभी छात्रों का भी मैं हृदय से बहुत-बहुत अभिनंदन करता हूं। यह दीक्षांत समारोह है, हम यह कभी भी मन में न लाएं कि यह शिक्षांत समारोह है। कभी-कभी तो मुझे लगता है दीक्षांत समारोह सही अर्थ में शिक्षा के आरंभ का समारोह होना चाहिए। यह शिक्षा के अंत का समारोह नहीं है और यही दीक्षांत समारोह का सबसे बड़ा संदेश होता है कि हमें अगर जिन्दगी में सफलता पानी है, हमें अगर जिन्दगी में बदलते युग के साथ अपने आप को समकक्ष बनाए रखना है तो उसकी पहली शर्त होती है – हमारे भीतर का जो विद्यार्थी है वो कभी मुरझा नहीं जाना चाहिए, वो कभी मरना नहीं चाहिए। दुनिया में वो ही इस विशाल जगत को, इस विशाल व्यवस्था को अनगिनत आयामों को पा सकता है, कुछ मात्रा में पा सकता है जो जीवन के अंत काल तक विद्यार्थी रहने की कोशिश करता है, उसके भीतर का विद्यार्थी जिन्दा रहता है।

आज जब हम दीक्षांत समारोह से निकल रहे हैं तब, हमारे सामने एक विशाल विश्व है। पहले तो हम यह कुछ square किलोमीटर के विश्व में गुजारा करते थे। परिचितों से मिलते थे। परिचित विषय से संबंधित रहते थे, लेकिन अब अचानक उस सारी दुनिया से निकलकर के एक विशाल विश्व के अंदर अपना कदम रखने जा रहे हैं। ये पहल सामान्य नहीं होते हैं। एक तरफ खुशी होती है कि चलिए मैंने इतनी मेहनत की, तीन साल - चार

साल - पांच साल इस कैम्पस में रहा। जितना मुझसे हो सकता था मैं ले लिया, पा लिया। लेकिन अब निकलते ही, दुनिया का मेरी तरफ नजरिया देखने का बदल जाता है।

जब तक मैं विद्यार्थी था, परिवार, समाज, साथी, मित्र मेरी पीठ थपथपाते रहते थे, नहीं-नहीं बेटा अच्छा करो, बहुत अच्छा करो, आगे बढ़ो, बहुत पढ़ो। लेकिन जैसे ही सर्टिफिकेट लेकर के पहुंचता हूं तो सवाल उठता है बताओ भई, अब आगे क्या करोगे? अचानक, exam देने गया तब तक तो सारे लोग मुझे push कर रहे थे, मेरी मदद कर रहे थे, प्रोत्साहित कर रहे थे। लेकिन सर्टिफिकेट लेकर घर लौटा तो सब पूछ रहे थे, बेटा अब बताओ क्या? अब हमारा दायित्व पूरा हो गया, अब बताओ तुम क्या दायित्व उठाओगे और यही पर जिन्दगी की कसौटी का आरंभ होता है और इसलिए जैसे science में दो हिस्से होते हैं – एक होता है science और दूसरा होता है applied science. अब जिन्दगी में जो ज्ञान पाया है वो applied period आपका शुरू होता है और उसमें आप कैसे टिकते हैं, उसमें आप कैसे अपने आप को योग्य बनाते हैं। कभी-कभार कैम्पस की चारदीवारी के बीच में, क्लासरूम की चारदीवारी के बीच में शिक्षक के सानिध्य में, आचार्य के सानिध्य में चीजें बड़ी सरल लगती हैं। लेकिन जब अकेले करना पड़ता है, तब लगता है यार अच्छा होता उस समय मैंने ध्यान दिया होता। यार, उस समय तो मैं अपने साथियों के साथ मास्टर जी का मजाक उड़ा रहा था। यार ये छूट गए। फिर लगता है यार, अच्छा होता मैंने देखा होता। ऐसी बहुत बातें याद आएंगी। आपको जीवन भर यूनिवर्सिटी की वो बातें याद आएंगी, जो रह गया वो क्या था और न रह गया होता तो मैं आज कहा था? ये बातें हर पल याद आती हैं।

मेरे नौजवान साथियों, यहां पर आपको अनुशासन के विषय में कुलाधिपति जी ने एक परंपरागत रूप से संदेश सुनाया। आप सब को पता होगा कि हमारे देश में शिक्षा के बाद दीक्षा, यह परंपरा हजारों साल पुरानी है और सबसे पहले तैत्तृक उपनिषद् में इसका उल्लेख है, जिसमें दीक्षांत का पहला अवसर रेखांकित किया गया है। तब से भारत में यह दीक्षांत की परंपरा चल रही है और आज भी यह दीक्षांत समारोह एक नई प्रेरणा का अवसर बन जाता है। जीवन में आप बहुत कुछ कर पाएंगे, बहुत कुछ करेंगे, लेकिन जैसा मैंने कहा, आपके भीतर का विद्यार्थी कभी मरना नहीं चाहिए, मुरझाना नहीं चाहिए। जिज्ञासा, वो विकास की जड़ों को मजबूत करती है। अगर जिज्ञासा खत्म हो जाती है तो जीवन में ठहराव आ जाता है। उम्र कितनी ही क्यों न हो, बुढ़ापा निश्चित लिख लीजिए वो हो जाता है और इसलिए हर पल, नित्य, नूतन जीवन कैसा हो, हर पल भीतर नई चेतना कैसे प्रकट हो, हर पल नया करने का उमंग वैसा ही हो जैसा 20 साल पहले कोई नई चीज करने के समय हुआ था। तब जाकर के देखिए जिन्दगी जीने का मजा कुछ और होता है। जीवन कभी मुरझाना नहीं चाहिए और कभी-कभी तो मुझे लगता है मुरझाने के बजाए अच्छा होता मरना पसंद करना। जीवन खिला हुआ रहना चाहिए। संकटों के सामने भी उसको झेलने का सामर्थ्य आना चाहिए और जो इसे पचा लेता है न, वो अपने जीवन में कभी विफल नहीं जाता है। लेकिन तत्कालिक चीजों से जो हिल जाता है, अंधेरा छा जाता है। उस समय यह ज्ञान का प्रकाश ही हमें रास्ता दिखाता है और इसलिए ये BHU की धरती से जो ज्ञान प्राप्त किया है वो जीवन के हर संकट के समय हमें राह दिखाने का, प्रकाश-पथ दिखाने का एक अवसर देता है।

देश और दुनिया के सामने बहुत सारी चुनौतियां हैं। क्या उन चुनौतियों में भारत अपनी कोई भूमिका अदा कर सकता है क्या? क्यों न हमारे ये संस्थान, हमारे विद्यार्थी आने वाले युगों के लिए मानव जाति को, विश्व को, कुछ देने के सपने क्यों न देखे? और मैं चाहूंगा कि BHU से निकल रहे छात्रों के दिल-दिमाग में, यह भाव सदा रहना चाहिए कि मुझे जो है, उससे अच्छा करू वो तो है, लेकिन मैं कुछ ऐसा करके जाऊं जो आने वाले युगों तक का काम करे।

समाज जीवन की ताकत का एक आधार होता है – Innovation. नए-नए अनुसंधान सिर्फ पीएचडी डिग्री प्राप्त करने के लिए, cut-paste वाली दुनिया से नहीं। मैं तो सोच रहा था कि शायद यह बात BHU वालों को तो पता ही नहीं होगी, लेकिन आपको भली-भांति पता है। लेकिन मुझे विश्वास है कि आप उसका उपयोग नहीं करते

होंगे। हमारे लिए आवश्यक है Innovation. और वो भी कभी-कभार हमारी अपनी निकट की स्थितियों के लिए भी मेरे मन में एक बात कई दिनों से पीड़ा देती है। मैं दुनिया के कई noble laureate से मिलने गया जिन्होंने medical science में कुछ काम किया है और मैं उनके सामने एक विषय रखता था। मैंने कहा, मेरे देश में जो आदिवासी भाई-बहन हैं, वो जिस इलाके में रहते हैं। उस belt में परंपरागत रूप से एक 'sickle-cell' की बीमारी है। मेरे आदिवासी परिवारों को तबाह कर रही है। कैंसर से भी भयंकर होती है और व्यापक होती है। मेरे मन में दर्द रहता है कि आज का विज्ञान, आज की यह सब खोज, कैंसर के मरीज के लिए नित्य नई-नई चीजें आ रही हैं। क्या मेरे इस sickle-cell से पीड़ित, मेरे आदिवासी भाइयो-बहनों के लिए शास्त्र कुछ लेकर के आ सकता है, मेरे नौजवान कुछ innovation लेकर के आ सकते हैं क्या? वे अपने आप को खपा दे, खोज करे, कुछ दे और शायद दुनिया के किसी और देश में खोज करने वाला जो दे पाएगा, उससे ज्यादा यहां वाला दे पाएगा क्योंकि वो यहां की रुचि, प्रकृति, प्रवृत्ति से परिचित है और तब जाकर के मुझे BHU के विद्यार्थियों से अपेक्षा रहती है कि हमारे देश की समस्याएं हैं। उन समस्याओं के समाधान में हम आने वाले युग को देखते हुए कुछ दे सकते हैं क्या?

आज विश्व Global warming, Climate change बड़ा परेशान है। दुनिया के सारे देश अभी पेरिस में मिले थे। CoP-21 में पूरे विश्व का 2030 तक 2 डिग्री temperature कम करना है। सारा विश्व मशक्कत कर रहा है, कैसे करे? और अगर यह नहीं हो पाया तो पता नहीं कितने Island डूब जाएंगे, कितने समुद्री तट के शहर डूब जाएंगे। ये Global warming के कारण पता नहीं क्या से क्या हो जाएगा, पूरा विश्व चिंतित है। हम वो लोग हैं जो प्रकृति को प्रेम करना, हमारी रगों में है। हम वो लोग हैं जिन्होंने पूरे ब्रह्मांड को अपना एक पूरा परिवार माना हुआ है। हमारे भीतर, हमारे ज़हन में वो तत्व ज्ञान तो भरा पड़ा है और तभी तो बालक छोटा होता है तो मां उसे शिक्षा देती है कि देखो बेटे, यह जो सूरज है न यह तेरा दादा है और यह चांद है यह तेरा मामा है। पौधे में परमात्मा देखता है, नदी में मां देखता है। ये जहां पर संस्कार हैं, जहां प्रकृति का शोषण गुनाह माना जाता है। Exploitation of the nature is a crime. Milking of the nature यही हमें अधिकार है। यह जिस धरती पर कहा जाता है, क्या दुनिया को Global warming के संकट से बचाने के लिए कोई नए आधुनिक innovation के साथ मेरे भारत के वैज्ञानिक बाहर आ सकते हैं क्या, मेरी भारत की संस्थाएं बाहर आ सकती हैं क्या? हम दुनिया को समस्याओं से मुक्ति दिलाने का एक ठोस रास्ता दिखा सकते हैं क्या? भारत ने बीड़ा उठाया है, 2030 तक दुनिया ने जितने संकल्प किए, उससे ज्यादा हम करना चाहते हैं। क्योंकि हम यह मानते हैं, हम सदियों से यह मानते हुए आए हैं कि प्रकृति के साथ संवाद होना चाहिए, प्रकृति के साथ संघर्ष नहीं होना चाहिए।

अभी हमने दो Initiative लिए हैं, एक अमेरिका, फ्रांस, भारत और बिल गेट्स का NGO, हम मिलकर के Innovation पर काम कर रहे हैं। Renewal energy को affordable कैसे बनाए, Solar energy को affordable कैसे बनाए, sustainable कैसे बनाए, इस पर काम कर रहे हैं। दूसरा, दुनिया में वो देश जहां 300 दिवस से ज्यादा सूर्य की गर्मी का प्रभाव रहता है, ऐसे देशों का संगठन किया है। पहली बार दुनिया के 122 देश जहां सूर्य का आशीर्वाद रहता है, उनका एक संगठन हुआ है और उसका world capital हिन्दुस्तान में बनाया गया है। उसका secretariat, अभी फ्रांस के राष्ट्रपति आए थे, उस दिन उद्घाटन किया गया। लेकिन इरादा यह है कि यह समाज, देश, दुनिया जब संकट झेल रही है, हम क्या करेंगे?

हमारा उत्तर प्रदेश, गन्ना किसान परेशान रहता है लेकिन गन्ने के रास्ते इथनॉल बनाए, petroleum product के अंदर उसको जोड़ दे तो environment को फायदा होता है, मेरे गन्ना किसान को भी फायदा हो सकता है। मेरे BHU में यह खोज हो सकती है कि हम maximum इथनॉल का उपयोग कैसे करे, हम किस प्रकार से करे ताकि मेरे उत्तर प्रदेश के गन्ने किसान का भी भला हो, मेरे देश के पर्यावरण और मानवता के कल्याण का काम हो

और मेरा जो vehicle चलाने वाला व्यक्ति हो, उसको भी कुछ महंगाई में सस्ताई मिल जाए। यह चीजें हैं जिसके innovation की जरूरत है।

हम Solar energy पर अब काम कर रहे हैं। भारत ने 175 गीगावॉट Solar energy का सपना रखा है, renewal energy का सपना रखा है। उसमें 100 गीगावॉट Solar energy है, लेकिन आज जो Solar energy के equipment हैं, उसकी कुछ सीमाएं हैं। क्या हम नए आविष्कार के द्वारा उसमें और अधिक फल मिले, और अधिक ऊर्जा मिले ऐसे नए आविष्कार कर सकते हैं क्या? मैं नौजवान साथियों को आज ये चुनौतियां देने आया हूं और मैं इस BHU की धरती से हिन्दुस्तान के और विश्व के युवकों को आह्वान करता हूं। आइए, आने वाली शताब्दी में मानव जाति जिन संकटों से जूझने वाली है, उसके समाधान के रास्ते खोजने का, innovation के लिए आज हम खप जाए। दोस्तों, सपने बहुत बड़े देखने चाहिए। अपने लिए तो बहुत जीते हैं, सपनों के लिए मरने वाले बहुत कम होते हैं और जो अपने लिए नहीं, सपनों के लिए जीते हैं वही तो दुनिया में कुछ कर दिखाते हैं।

आपको एक बात का आश्चर्य हुआ होगा कि यहां पर आज मेरे अपने personal कुछ मेहमान मौजूद हैं, इस कार्यक्रम में। और आपको भी उनको देखकर के हैरानी हुई होगी, ये मेरे जो personal मेहमान हैं, जिनको मैंने विशेष रूप से आग्रह किया है, यूनिवर्सिटी को कि मेरे इस convocation का कार्यक्रम हो, ये सारे नौजवान आते हो तो उस कार्यक्रम में भाग लेने के लिए उनको बुलाइए। Government schools सामान्य हैं, उस स्कूल के कुछ बच्चे यहां बैठे हैं, ये मेरे खास मेहमान हैं। मैंने उनको इसलिए बुलाया है और मैं जहां-जहां भी अब यूनिवर्सिटी में convocation होते हैं। मेरा आग्रह रहता है कि उस स्थान के गरीब बच्चे जिन स्कूलों में पढ़ते हैं ऐसे 50-100 बच्चों को आकर के बैठाइए। वो देखे कि convocation क्या होता है, ये दीक्षांत समारोह क्या होता है? ये इस प्रकार की वेशभूषा पहनकर के क्यों आते हैं, ये हाथ में उनको क्या दिया जाता है, गले में क्या डाला जाता है? ये बच्चों के सपनों को संजोने का एक छोटा-सा काम आज यहां हो रहा है। आश्चर्य होगा, सारी व्यवस्था में एक छोटी-सी घटना है, लेकिन इस छोटी-सी घटना में भी एक बहुत बड़ा सपना पड़ा हुआ है। मेरे देश के गरीब से गरीब बच्चे जिनको ऐसी चीजें देखने का अवसर नहीं मिलता है। मेरा आग्रह रहता है कि आए देखे और मैं विश्वास से कहता हूं जो बच्चे आज ये देखते हैं न, वो अपने मन में बैठे-बैठे देखते होंगे कि कभी मैं भी यहां जाऊंगा, मुझे भी वहां जाने का मौका मिलेगा। कभी मेरे सिर पर भी पगड़ी होगी, कभी मेरे गले में भी पांच-सात गोल्ड मेडल होंगे। ये सपने आज ये बच्चे देख रहे हैं।

मैं विश्वास करूंगा कि जिन बच्चों को आज गोल्ड मेडल मिला है, वो जरूर इन स्कूली बच्चों को मिले, उनसे बातें करे, उनमें एक नया विश्वास पैदा करे। यही तो है दीक्षांत समारोह, यही से आपका काम शुरू हो जाता है। मैं आज जो लोग जा रहे हैं, जो नौजवान आज समाज जीवन की अपनी जिम्मेदारियों के कदम रखते हैं। बहुत बड़ी जिम्मेदारियों की ओर जा रहे हैं। दीवारों से छूटकर के पूरे आसमान के नीचे, पूरे विश्व के पास जब पहुंच रहे हैं तब, यहां से जो मिला है, जो अच्छाइयां हैं, जो आपके अंदर सामर्थ्य जगाती है, उसको हमेशा चेतन मन रखते हुए, जिन्दगी के हर कदम पर आप सफलता प्राप्त करें, यही मेरी आप सब को शुभकामनाएं हैं, बहुत-बहुत धन्यवाद।

अतुल कुमार तिवारी/अमित कुमार/सुरेन्द्र कुमार/सोनिका/मनीषा-1141
(Release ID :136643)

**Press Information Bureau
Government of India
Prime Minister's Office**

07-February-2016 15:07 IST

Text of PMs speech at National Institute of Science Education and Research in Odisha

जय जगन्नाथ,

ओडिशा के राज्यपाल डॉक्टर जमीर जी, ओडिशा के मुख्यमंत्री श्रीमान नवीन बाबू, केंद्र में मंत्रिपरिषद के मेरे साथी श्रीमान जुएल ओराम जी, मंत्रिपरिषद के मेरे युवा साथी धर्मेन्द्र प्रधान जी, कृषि विभाग के मंत्री और मेरे साथ पीएमओ में काम रहे डॉक्टर जीतेन्द्र सिंह जी, संसद सदस्य डॉक्टर प्रसन्नद कुमार सिंह जी, Atomic commission के चेयरमैन डॉक्टर शेखर बसु जी, नायसिर के प्रोफेसर चन्द्र शेखर जी, यहां पधारे हुए इस क्षेत्र के सभी ज्ञाता महानुभाव सभी नौजवान मित्रों...

यह मेरा सौभाग्य है कि मुझे राष्ट्र को एक बहुत बड़ी विरासत सौंपने का अवसर मिला है। ईमारतें तो बहुत बनती हैं, भवन भी बहुत बनते हैं। लेकिन ईंट, पत्थर चूने से बने हुए भवन और ईमारत तब तक प्रेरणा के केंद्र नहीं बनते जब तक कि उसके साथ जुड़े हुए लोगों के साथ आत्मा उनके साथ जुड़ती नहीं है। और इसलिए व्यवस्थाओं का महत्व होते हुए भी व्यवस्थाओं के भीतर प्राण होने चाहिए। और मुझे इस बात की खुशी है कि विज्ञान और technology के क्षेत्र में हमारे scientist, हमारे प्रोफेसर, हमारे Students इन दिनों जी-जान से जुटे हुए हैं। कुछ न कुछ नया करने का इरादा हर किसी के मन में होता है। हर किसी के नसीब में नोबेल प्राइज नहीं हो सकता है। लेकिन कोई रिसर्च, कोई innovation किसी गरीब की जिंदगी में बदलाव लाना है तो उससे बड़ा कोई नोबेल प्राइज नहीं होता है और इसलिए हम जिस दिशा में जाना चाहे तब हमारी प्राथमिकता यह रहे कि आने वाले दिनों में हम ऐसी कैसी व्यावस्थाएं विकसित करके दें, ऐसा कैसा विज्ञान, ऐसी कैसी Technology लोगों के लिए लाएं जो affordable हो Sustainable हो, और मेरा तो हमेशा आग्रह रहता है Zero effect, Zero defect, Zero effect का मेरा तात्पर्य यह रहता है कि दुष्प्रभाव किसी भी प्रकार से न हो। चाहे Environment पर हो, चाहे Climate का विषय हो। चाहे Global warming का विषय हो। या व्यक्ति की जिन्दगी हो या प्राकृतिक संपदा हो, इस पर कोई Side effect न हो। और हमारा Product भी ऐसा हो जो Zero defect हो, ताकि वो न सिर्फ भारत में globally accepted हो और इसलिए हम सिर्फ खोज करे, नया सोचे, इतने से नहीं है। हमें इसे सामान्य जन तक पहुंचाना यह भी एक बहुत बड़ा चुनौती होती है। मैंने देखा भव्य Campus है। लेकिन दो काम मैं आपसे चाहता हूं और विशेष करके खजाने से नहीं, तिजोरी से नहीं, बजट से नहीं, आप लोगों के अपने प्रयास से, क्या एक Campus हिन्दुस्तान का सबसे Greenest Campus बन सकता है क्या, मैं देख रहा था यहां आते ही एक छोटा-सा टीला देखा मैंने पहाड़ी तो नहीं कह सकता हूं लेकिन पेड़ नजर नहीं आ रहे हैं। अगर वही जो Construction चलते समय ही साथ-साथ कर लिया होता। क्या अब हम तय कर सकते हैं कि दो साल के भीतर-भीतर उसे पूरी तरह हम ग्रीन बना देंगे। हर Student अपने परिवार जन आये तो परिचय करने के लिए जाएं, हां यह मेरा परिवार का एक सदस्य है। यह पांच महोदय मेरे हैं। मैं इसका लालन-पालन कर रहा हूं, मेरे माता-पिता मुझे मिलने आएंगे। तो मैं उनको दिखाने के लिए ले जाऊंगा। देखिए संकल्प करना होता है, अगर आप संकल्प करें तो हिंदुस्तान का ये educational complex The Greenest Campus बना करके आप उसको हिंदुस्तान में एक सिरमौर जगह दे सकते हैं।

उसी प्रकार से दूसरा विषय है आप विज्ञान के विद्यार्थी हैं Technology से जुड़े हुए हैं। यह पूरी तरह Greenery के संदर्भ में तो Green बने, ही बने। लेकिन Environment के संबंध में भी यह पूरा भवन solar Technology Zero discharge इन सारे विषयों को अपने मे समाहित करके हम Develop कर सकते हैं क्या ? यह चुनौतियां हमने सहज रूप से स्वीकार करनी चाहिए। और

यह अगर हम करते हैं तो आप देखिए इस Campus के साथ अपनापन लगेगा। इसकी हर ईंट, पत्थर, दीवार हमें अपनी लगेगी और जब तक हम उसे पूजाघर के रूप में नहीं देखते हैं हमारी आत्मा उसके साथ जुड़ती नहीं है और इसलिए मैंने प्रारंभ में कहा था ईमारतों से परिणाम नहीं आते हैं, परिणाम तब आते हैं जब ईमारतों के साथ आत्माएं जुड़ते हैं। जीवन समर्पित हो जाता है, तब परिणाम आता है।

कभी-कभार यह भी विवाद रहता है कि उत्तम laboratory होगी, उत्तम साधन होंगे, तभी विज्ञान में प्रगति होगी। उसमें सच्चाई है लेकिन यह भी पहलू है कि आज पूरी दुनिया में भारत का Space Mission उसने अपनी एक इज्जत बनाई है, जगह बनाई है। Mars mission में दुनिया में सबसे पहले सफल होने वाले हमारे देश के नौजवान रहे। लेकिन बहुत कम लोगों को पता होगा कि जब Space science में हमारे यहां काम शुरू किया गया तब उसके Equipment साइकिल पर उठा करके ले जाये जाते थे और मोटर के गैरेज में काम किया जाता था और उससे जा करके आज Space science में हमने जगह बनाई है। उत्तम भवन नहीं थे, उत्तम व्यवस्थाएं नहीं थी, लेकिन उस समय काम करने वाले लोगों का एक सपना था, एक मिशन था, समर्पण था, जिसके कारण आज Space के अंदर भारत का झंडा लहरा रहा है। उन लोगों के परिश्रम और पुरुषार्थ के कारण लहरा रहा है। और इसलिए हमारे भीतर मुझे कुछ देके जाना है। कुछ करके जाना है, किसी के लिए जीके जाना है। यह भाव जब तक प्रबल नहीं होता है हम नयापन दुनिया को दे नहीं सकते हैं। मानवजात का एक स्वतभाव रहा है, इन निरंतर परिवर्तनशील होता है। हर युग में उसने अपने आप में बदलाव लाया है, खुद ने बदलाव में अपने आप को ढाला है। Innovation अगर बंद हो जाता है तो जीवन स्थगित हो जाता है। व्यवस्थाएं निष्प्राण हो जाती है, व्यवस्थाएं अगर निष्प्राण होती हैं तो जीवन कभी प्राणवान हो नहीं सकता है और इसलिए innovation यह हर समाज की हर युग की आवश्यकता है। हमें innovation का Environment बनाना पड़ेगा। और यह आपकी Institute है NISER और Yes सर नहीं है। जहां yes sir आए वहां विज्ञान अटक जाता है, जहां NISER है वहां विज्ञान आगे बढ़ता है। हर बात में कहते हैं No सर इसका तो कुछ और होना चाहिए। यह जो curiosity है। यह नया सवाल मन में उठते रहते हैं वहीं से तो खोज पैदा होती है। Question Mark यह खोज की जननी बन जाता है। वहीं गर्भाधान करता है। और इसलिए हमारा Yes सर वाला Institute नहीं है, NISER वाला Institute है जो कहेगा No सर ऐसा होगा। यह environment create करना होगा। अगर यह environment create होता है तो हर चीज नई बनती है।

हमारे सामने कई challenges हैं। और ऐसा नहीं है कि challenges का उपाय हमारे पास नहीं है। अब हम ओडिशा में Black Diamond के मालिक हैं। विपुल भंडार भरा पड़ा है हमारे पास। लेकिन दुनिया में जो बदलाव आ रहा है कहीं ऐसा न हो जाए कि Black Diamond हमारा बोझ बन जाए। क्योंकि दुनिया climate को लेकर चर्चा कर रही है। fossil fuel के विरुद्ध में एक बड़ा आंदोलन खड़ा हो रहा है कि हम समय रहते विज्ञान के माध्यम से टेक्नोलॉजी के माध्यम से ऐसी व्यवस्था विकसित करें कि हम coal gasification करके हम clean energy की दिशा में कैसे जाएं और वो सस्ती टेक्नोलॉजी की दिशा में हमारी institution कैसे काम करें। हमारे नौजवान कैसे काम करें। हमारे सामने काम है। हमारा समुद्री तट, ओडिशा का समुद्री तट, हिंदुस्तान का समुद्री तट। Blue Economy यह आने वाले समय में एक बहुत बड़ा क्षेत्र बनने वाला है। और मैं हमेशा कहता हूं भारत का जो तिरंगा झंडा है और उसमें एक blue colour का चक्र है। यह चतुर क्रांति का मार्ग दर्शक है। हमें saffron revolution चाहिए, हमें white revolution चाहिए, हमें green revolution चाहिए, हमें Blue revolution चाहिए।

जब मैं saffron revolution कहता हूं, energy का colour है saffron, मैं white revolution कहता हूं तब मैं डेरी फार्मिंग, पशुपालन, किसान, milk product उसकी बात करता हूं। मैं green revolution कहता हूं तब मैं environment की बात भी करता हूं, agriculture revolution की भी बात करता हूं और जब मैं Blue revolution की बात करता हूं तब हमारा समुद्री संपदा जो है और हमारा जो नीला आसमान है इन दोनों की ओर हमारा ध्यान रहे हमारा आसमान नीला कैसे बना रहे। और

हमारी समुद्री संपदा जिसको जितनी मात्रा में हमें खोजना चाहिए नहीं खोज पाए हैं। क्या कारण है कि हमारे पूर्वजों ने इसको रत्नाकर कहा था। अगर वो रत्नाकर है तो रत्न के भंडार पड़े हैं। उन रत्नों के भंडार है तो हमने क्या खोजा। हमारी सामुद्रिक संपदा का उपयोग हम राष्ट्र के लिए कैसे कर सकते हैं। हमारे मछुआरे भाई-बहन साल में छह महीने, आठ महीने रोजगार मिलता है। लेकिन उसी समुद्री तट पर अगर seaweed की खेती करते हैं। और seaweed में value addition करने की दिशा में हम काम करते हैं, हमारे bio technology में काम करने वाले, biology में काम करने वाले sea bead पर कैसे काम किया जा सकता है। वो nutrition value बहुत होने के बावजूद भी उस पर हमारा ध्यान नहीं है। हो सकता है हमारे मछुआरे की आय का वो कारण बन सकता है।

हम वैसी विज्ञान के कौनसी चीजों की ओर चलें जो हमारे देश के Requirement को पूरा कर सके। Energy मानव जीवन के लिए अनिवार्य हिस्सा बन चुका है। उसके बिना जीवन असंभव हो रहा है और Energy के Resource की मर्यादाएं हैं। अब आप देखिए पहले की Energy सिटी में आए LED Bulb, Innovation हुआ Research हुआ Energy Saving उसके साथ-साथ आई और सहज रूप से और मुझे हमारे डिपार्टमेंट के लोग बता रहे थे कि भारत में तो इन दिनों LED का बहुत बड़ा Movement चल पड़ा है। कई शहरों ने अपनी स्ट्रीट लाइट LED की है। 100 Cities का MOU किया है भारत सरकार ने। 100 Cities के लाइट को LED करते हैं और 100 Cities में घरों में हम LED पहुंचाते हैं, तो मुझे बताया गया कि 20,000 मेगावॉट बिजली बचेगी। अब भारत जैसे गरीब देश में 20,000 मेगावॉट बिजली पैदा करना है तो लाखों करोड़ों रुपया चाहिए, लेकिन 20,000 मेगावॉट बिजली बचानी है तो एक LED Bulb लेकर के एक जागृति लानी चाहिए, परिवर्तन आता है। यानी Affordable Sustainable Technology किस प्रकार से बदलाव ला सकती है LED एक बहुत बड़ा उदाहरण है हमारे सामने। और इसलिए आप नौजवानों से आग्रह करूंगा कि हम विज्ञान को किस रूप में Innovation को Science को किस रूप में ले जाएं, जो हमारी जो Energy की समस्याएं हैं उसको हम समाधान करें। 175 Giga Watt Renewal Energy की दिशा में हम जा रहे हैं। Climate Justice इस पर हमारा बल है लेकिन 175 Giga Watt Renewal Energy पर जाना है तो आज जो पद्धति है वो इतनी Costly है कि भारत के लिए वो मुश्किल हो सकता है।

लेकिन हमने रास्ता खोजने का तय भी कर लिया है और क्यों मेरे इन नौजवानों में भरोसा है जो आने वाले दिनों में सोलर Energy के क्षेत्र में नए रीसर्च करेंगे। आज हमारे सामने चैलेंज है सोलर एनर्जी को कैसे प्रीजर्व करना, उसको कैसे रखे रखना। दिन में सूर्य है रात में भी उस बिजली का उपयोग कर कर और वह सारी व्यवस्था कैसे चीप हो सस्ती हो, ये हमारे सामने चुनौती है। अगर एक बार हम सोलार पावर को संभालने की व्यवस्था में हम मास्टरी पा लेंगे मैं नहीं मानता हूं और कोई रीसोर्सेस की जरूरत पड़ेगी। और इसलिये भारत और अभी हमने बहुत बड़े दो काम किये। अभी COP-21 जब फ्रांस में हुआ। सारी दुनिया ने भारत की बड़ी तारीफ की है कि भारत ने बहुत बड़ी भूमिका अदा की कि भारत ने बड़ा लीड रोल किया। लेकिन वहां दो और चीजें हुई हैं जिसकी तरफ दुनिया का ध्यान नहीं गया। COP 21 में हिंदुस्तान, अमेरिका, फ्रांस एंड बिल गेट्स का एक एनजीओ है, सब मिलकर के सोलर के क्षेत्र में, Renewal Energy के क्षेत्र में, Innovation पर बहुत बड़ा बल देने का काम शुरू करने वाले हैं। तीनों देश और एनजीओ काफी पूंजी लगाने वाले हैं। Innovation के लिए इस दिशा में बहुत काम होने वाला है।

दूसरा काम जो पेरिस में तय हुआ COP -21 में, दुनिया के 122 Country ऐसे हैं कि जहां 300 दिन से ज्यादा सोलार पावर Available है। सूर्य की शक्ति Available है। ओड़िशा तो सूर्यदेव की धरती है, कोणार्क का सूर्य मंदिर दुनिया के लिए प्रेरणा देने वाला है। दुनिया के 122 देश इकट्ठे आये हैं और एक International Solar Alliance नाम का संगठन खड़ा किया है और जिसका कैपिटल उसका हैडक्वार्टर हिन्दुस्तान में रहने वाला है और फ्रांस के भी राष्ट्रपति आए थे। उसके सचिवालय का उद्घाटन भी किया है। कहने का हमारा तात्पर्य है कि बहुत बड़ी मात्रा में ये काम चल रहा है। स्वच्छ भारत ये मिशन हमने

उठाया है। लेकिन स्वच्छ भारत की सफलता उस बात पर निर्भर करती है कि हम Waste में से Wealth Create करने के लिए कैसे Innovation करें कैसी Technology लायें।

हमें 2022 में हिन्दुस्तान के गरीब से गरीब व्यक्ति को उसको अपना घर देने का हमारा सपना है। 2022 में हिन्दुस्तान गरीब से गरीब व्यक्ति को घर देना है, तो मैं वो कौनसा मटेरियल खोज सकता हूँ जो आज Waste में से Wealth बन सकता है और हमारी इमारतों को बनाने के लिए मजबूती देने वाला काम कर सकता है। हम ऐसे कैसे रीसर्च कर सकते हैं हम विज्ञान का क्या उपयोग कर सकते हैं कि हम 2022 में हमारा आर्किटेक्चर हो हमारा इंजीनियरिंग हो मटेरियल साइंस हो। हम इन चीजों का उपयोग करके इस प्रकार की कैसी व्यवस्था दे सकें कि 2022 जबकि देश हिन्दुस्तान आज़ादी के 75 साल मनाता होगा। तब हमारे महापुरुषों ने जिन्होंने हमें देश की आज़ादी दी। हम उनको ऐसा हिन्दुस्तान दें। जिसमें हर गरीब को अपना घर हो। और घर बनाने में हमारे इन वैज्ञानिकों का बहुत बड़ा रोल हो।

Waste में से Wealth Create करना आज अगर सोलिड Waste में से Energy बनानी है तो बहुत Costly है। लेकिन क्या हम इस प्रकार के Innovation कर सकते हैं Technology को Develop कर सकते हैं, जिसके कारण हम Waste में से Wealth Create करने में और सुविधा पैदा कर सकें। तो स्वच्छ भारत का जो अभियान है। उस अभियान को बहुत तेजी मिलेगी। और एक प्रकार से स्वच्छता ये अपने आप में एक Entrepreneurship का क्षेत्र बन जाएगा। नए रोजगार के अवसर प्रदान करेगा। और इसलिये मैं नौजवानों से आग्रह करता हूँ। हम आने वाले दिनों में डीजिटल वर्ल्ड में जीने वाले हैं। और ये कोई फेसबुक, वॉट्सअप पर सीमित नहीं रहने वाला। जीवन में बहुत बड़ा प्रभाव होने वाला है। हम डीजिटल इंडिया की दुनिया में हम अपना क्या Contribution दें, ताकि हम भारत के सामान्य मानवीय तक इन व्यवस्थाओं को पहुंचा सकें।

यहां पर मैथमैटिक पर काफी काम हो रहा है। मुझे एक बार प्रोफेसर मंजुल भार्गव से बातचीत करने का अवसर मिला। मैथमैटिक की दुनिया में छोटी आयु में उन्होंने बहुत बड़ा योगदान किया है। कई सारे अवॉर्ड मिले हैं। मैंने उनका एक इंटरव्यू देखा तो मेरा मन कर गया कि मैं उनसे मिला था। वो कहता है कि मेरे पिताजी संस्कृत के शिक्षक थे। मेरे घर में संस्कृत का माहौल था। तो मैं संस्कृत के सारे पुराने लिटरेचर से परिचित था। और मैंने देखा कि उसमें mathematically बहुत कुछ था। तो मैंने उस ancient ज्ञान का उपयोग किया। modern knowledge के साथ उसको interface किया। और उसमें से मैंने नई चीजों को पनपाया जो दुनिया के लिए अचरज बन गया और आज मुझे मैथमैटिक की दुनिया में एक Authority मान लिया गया। कहने का तात्पर्य यह है कि हमारे ancient philosophy में कुछ न कुछ ऐसा होगा, मैं तो नहीं जानता हूँ मैं उसका मास्टर नहीं हूँ। लेकिन अगर होगा तो हम लोगों का काम है उसको विज्ञान के तराजू पर तराशना चाहिए और आने वाली पीढ़ी को वो ज्ञान काम आ सकता है तो उसको हमने विज्ञान और Technology में convert करना चाहिए। और उस दिशा में अगर हम काम कर सकते हैं तो हम मानवजात की बहुत बड़ी सेवा कर सकते हैं। और उस दिशा में हम लोगों ने प्रयास करना चाहिए।

ये भी सही है कि हम लोगों के लिए खासकर के Formative age में स्कूली बच्चों में Scientific Temper कैसे Develop हो ये हमारे लिए बहुत आवश्यक होता है। और इसलिये क्या हम ओड़िशा के जो साइंस टीचर है उनको 5 दिन का 7 दिन का 10 दिन का NISER में कोई कोर्सेस कर सकते हैं, ताकि गांव के स्कूल के साइंस के टीचर भी और उनको यहां के जो आपके 700-800 स्टूडेंट हैं उनके ग्रुप के साथ जोड़ना चाहिए, ताकि ये नये स्टूडेंट जो हैं, जो नया विज्ञान जानते हैं हम जो नई चीजें जानते हैं वो उनसे बातें करें। नहीं तो क्या होता है पुराने जो हमारे पिताजी पढ़े हुए हैं हमारे पिताजी के पिताजी जो पढ़े होंगे वो जो नोटबुक होती है उसी से प्रोफेसर अभी भी पढ़ाते हैं। देखिये बदलाव स्वीकार करना पड़ेगा। हमें नयापन लाना पड़ेगा। हर चीज में Innovation चाहिए। और इसलिये उस Innovation के लिए हम हमारे उसी प्रकार के साइंस फेयर होते हैं। हर राज्य में स्टूडेंट्स के साइंस फेयर लगते हैं। क्या कभी उन स्कूलों के साथ मेंटर के रूप में हमारे NISER के स्टूडेंट को अटैच किया

जा सकता है। कि भई हमारे 10 स्टूडेंट फलाने जिले की सबसे टॉप स्कूल है उस साथ अटैच रहेंगे। वो साल में दो बार पांच बार सात बार वहां जाएंगे। स्कूल के टीचर स्टूडेंट के साथ बैठेंगे। और साइंस फेयर में द बेस्ट कोई इनोवेटिव चीज लेकर के जाएंगे, तो स्टूडेंट के दिमाग में विज्ञान के प्रति भाव जगेगा। और जो हमारे स्टूडेंट जो यहां काम कर रहे हैं उनको पढ़ते – पढ़ते सीखने का और सिखाने का स्वभाव बन जाएगा। उसकी वो ताकत बन जाएगा। हम एक ऐसी सहज व्यवस्थाएं कैसे विकसित करें ताकि हम NISER का सच्चे अर्थ में लोकोपयोगी तरीके से उपयोग कर सकें। आज मेरे लिये गर्व का विषय है। कि राष्ट्र को खास कर के देश की युवा पीढ़ी को, खास कर के भारत के ज्ञान और टेक्नॉलॉजी को ये भव्य संकुल समर्पित करने का मुझे अवसर मिला है। मैं राष्ट्र को ये भव्य संकुल समर्पित करता हूं और सभी नौजवानों को हृदय से बहुत – बहुत शुभकामनाएं देता हूं। बहुत-बहुत धन्यवाद।

अमित कुमार ,हिमांशु सिंह, सुरेंद्र कुमार, शौकत अली, सोनिका, तारा

**Press Information Bureau
Government of India
Prime Minister's Office**

19-April-2016 15:15 IST

Text of PM's Convocation address at the 5th Convocation of Shri Mata Vaishno Devi University in Katra

उपस्थित महानुभाव और आज के केन्द्र बिन्दु, सभी युवा साथियों,

आपके जीवन का यह बड़ा महत्वपूर्ण अवसर है। एक प्रकार से KG से प्रारंभ करे तो 20 साल-22 साल-25 साल, एक लगातार तपस्या का एक महत्वपूर्ण पड़ाव है और मैं नहीं मानता हूँ की आप भी यह मानते होंगे कि यह मंजिल पूरी हो गई है। अब तक आपको किसी ने यहां पहुंचाया है। अब आपको अपने आपको कहीं पहुंचाना है। अब तक कोई उंगली पकड़कर के यहां लाया है, अब आप अपने मकसद को लेकर के खुद को कसौटी पर कसते हुए, मंजिल को पाने के लिए, अनेक चुनौतियों को झेलते हुए आगे बढ़ना है। लेकिन वो तब संभव होता है कि आप यहां से क्या लेकर जाते हैं। आपके पास वो कौन-सा खजाना है जो आपकी जिन्दगी बनाने के लिए काम आने वाला है। जिसने यह खजाना भरपूर भर लिया है, उसको जीवन भर, हर पल, हर मोड़ पर, कहीं न कहीं यह काम आने वाला है। लेकिन जिसने यहां तक आने के लिए सोचा था।

ज्यादातर अगर युवकों को पूछते हैं कि क्या सोचा है आगे? तो कहता है, पहले एक बार पढ़ाई कर लूं। जो इतनी ही सोच रखता है, उसके लिए कल के बाद एक बहुत बड़ा question mark जिन्दगी में शुरू हो जाता है कि यह तो हो गया, अब क्या? लेकिन जिसे पता है कि इसके बाद क्या। उसे किसी के सहारे की जरूरत नहीं लगती है। माँ-बाप जब संतान को जन्म देते हैं तो उनकी खुशी का पार नहीं होता है। लेकिन जब संतान जीवन में सिद्धि प्राप्त करता है तो माँ-बाप अनंत आनंद में समाहित हो जाते हैं। संतान को जन्म देने से जो खुशी है, उससे संतान की सिद्धि हजारों गुना ज्यादा खुशी उन माँ-बाप को देती है।

आप कल्पना कर सकते हैं कि आपके जन्म से ज्यादा आपके जीवन की खुशी आपके माँ-बाप को देती है, तब आपकी जिम्मेवारी कितनी बढ़ जाती हैं। आपके माँ-बाप ने किन-किन सपनों को लेकर के आपके जीवन को बनाने के लिए क्या कुछ नहीं झेला होगा? कभी आपको कुछ खरीदना होगा, मनीऑर्डर की जरूरत होगी, बैंक में money transfer करने की इच्छा हो, अगर दो दिन late भी हो गए होंगे तो आप परेशान हो गए होंगे कि पता नहीं मम्मी-पापा क्या कर रहे हैं? और माँ-बाप ने भी सोचा होगा, अरे! बच्चे को दो दिन पहले जो पहुंचना था.. देर हो गई। अगली बार कुछ सोचेंगे, कुछ खर्च में कमी करेंगे, पैसे बचाकर रखेंगे ताकि बच्चे को पहुंच जाए। जीवन के हर पल को अगर हम देखते जाएंगे तो पता चलेगा कि क्या कुछ योगदान होगा, तब हम जिन्दगी में कुछ पा सकते हैं, कुछ बन सकते हैं। लेकिन ज्यादातर हम इन चीजों को भूल जाते हैं। जो भूलना चाहिए वो नहीं भूल पाते हैं, जो नहीं भूलना चाहिए उसे याद रखना मुश्किल हो जाता है।

आप में से बहुत होंगे जिन्होंने बचपन में अपने माँ-बाप से सुना होगा कि इसको तो इंजीनियर बनाना है, इसको तो डॉक्टर बनाना है, इसको तो क्रिकेटर बनाना है। कुछ न कुछ माँ-बाप ने सपने देखे होंगे और धीरे-धीरे वो आपके अंदर inject हो गए होंगे। दसवीं कक्षा में बड़ी मुश्किल से निकले होंगे लेकिन वो सपने सोने नहीं देते होंगे क्योंकि माँ-बाप ने कहा था, inject किया हुआ था और कुछ नहीं हुआ तो घूमते-फिरते यहां पहुंच गए और जब यहां पहुंच गए तो इस बात का आनंद नहीं है कि इतनी बढ़िया university में आए हैं, बढ़िया शिक्षा का माहौल मिला है। लेकिन परेशानी एक बात की रहती है कि जाना तो वहां था, पहुंचा यहां। जिसके दिल-दिमाग में, जाना तो वहां था लेकिन पहुंच नहीं पाया, इसका बोझ रहता है, वो जिन्दगी कभी जी नहीं सकता है और इसलिए मेरा आपसे आग्रह है, मेरा आपसे अनुरोध है। ठीक है, बचपन में, नासमझी में बहुत कुछ सोचा होगा,

नहीं बन पाए, उसको भूल जाइए। जो बन गए हैं, उस विरासत को लेकर के जीने का हौसला बुलंद कीजिए, अपने आप जिन्दगी बन जाएगी।

कुंठा, असफलता, सपनों में आई रूकावटें, ये बोझ नहीं बननी चाहिए, वो शिक्षा का कारण बनना चाहिए। उससे कुछ सीखना होता है और अगर उसको सीख लेते हैं तो जिन्दगी में और बड़ी चुनौतियों को स्वीकार करने का सामर्थ्य आ जाता है। पहले के जमाने में कहा जाता था कि भई इस tunnel में चल पड़ा मैं, तो आखिरी मंजिल उस छोर पर जहां से tunnel पूरी होगी, वहीं निकलेगी। अब वक्त बदल चुका है। इसके बाद भी जरूरी नहीं है कि जिस रास्ते पर आप चल पड़े हैं वहीं पर आखिरी छोर होगा, वहीं गुजारा करना पड़ेगा। अगर आप में हौसला है तो jump लगाकर के कहीं और भी चले जा सकते हैं, कोई और नए क्षितिज को पार कर सकते हैं। ये बुलन्दी होनी चाहिए, ये सपने होने चाहिए।

बहुत सारे विद्यार्थी इस देश में, university में पढ़ते होंगे। क्या आप भी उन करोड़ों विद्यार्थियों में से एक है, क्या आप भी उन सैकड़ों university में से एक university के student है? मैं समझता हूं सोचने का तरीका बदलिए। आप उन सैकड़ों university में से एक university के student नहीं है। आप उन करोड़ों विद्यार्थियों की तरह एक विद्यार्थी नहीं है, आप कुछ और है। और मैं जब और है कहता हूं तो उसका तात्पर्य मेरा यह है कि हिन्दुस्तान में कई university चलती होंगी जो taxpayer के पैसों से, सरकारी पैसों से, आपके माँ-बाप की फीस से चलती होगी। यही एक university अपवाद है, जिसमें बाकी सब होने के उपरांत माता वैष्णो देवी के चरणों में हैं। जिन गरीब लोगों ने पैसे चढ़ाए हैं, उसके पास पैसे नहीं थे घोड़े से पहुंचने के लिए, उसकी उम्र 60-65-70 हुई होगी, वो अपने गांव से बड़ी मुश्किल से without reservation चला होगा, केरल से-कन्याकुमारी से, वो वैष्णो देवी तक आया होगा। माँ को चढ़ावा चढ़ाना है इसलिए रास्ते में एक वक्त का खाना छोड़ दिया होगा कि माँ को चढ़ावा चढ़ाना है। ऐसे गरीब लोगों ने और हिन्दुस्तान के हर कोने के गरीब लोगों ने, किसी एक कोने के नहीं हर कोने के गरीब लोगों ने इस माता वैष्णो देवी के चरणों में कुछ न कुछ दिया होगा। दिया होगा तब तो उसको लगा होगा कि शायद कुछ पुण्य कमा लूं लेकिन जो दिया है उसका परिणाम है कि इतना बड़ा पुण्य कमाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। इसलिए आपकी शिक्षा-दीक्षा में इस दीवारों में, इस इमारत में, यहां के माहौल में उन गरीबों के सपनों का वास है। और इसलिए औरों से हम कुछ अलग है और universities से हम कुछ अलग है और शायद ही दुनिया में करोड़ों-करोड़ों गरीबों के दो रुपए-पाँच रुपए से कोई university चलती हो, यह अपने आप में एक अजूबा है और इसलिए इसके प्रति हमारा भाव उन कोटि-कोटि गरीबों के प्रति अपनेपन के भाव में परिवर्तित होना चाहिए। मुझे कोई गरीब दिखाई दे, मैं जीवन की किसी भी ऊँचाई पर पहुंचा क्यों न हो, मुझे उस पल दिखना चाहिए कि इस गरीब के लिए कुछ करूंगा क्योंकि कोई गरीब था जिसने एक बार खाना छोड़कर के माँ के चरणों में एक रुपया दिया था, जो मेरी पढ़ाई में काम आया था। और इसलिए यहां से हम जा रहे हैं तब आपको इस बात की भी खुशी होगी कि बस ! बहुत हो गया, चलो यार कुछ पल ऐसे ही गुजारते हैं। ऐसा बहुत कुछ होता है। लेकिन जिन्दगी की कसौटी तब शुरू होती है जब अपने आप के बलबूते पर दिशा तय करनी होती है, फैसले लेने होते हैं।

अभी तो इस campus में कुछ भी करते होंगे, कोई तो होगा जो आपको ऊंगली पकड़कर के चलाता होगा। आपका जो senior होता होगा वो भी कहता है नहीं, नहीं ऐसा मत करो यार, तुम इस पर ख्याल रखो। अच्छा हो जाएगा। अरे campus के बाहर कोई चाय बेचने वाला होगा, वो भी कहता है भाई अब रात देर हो गई, बहुत ज्यादा मत पढ़ो, जरा सो जाओ, सुबह तुम्हारा exam है। किसी peon ने भी आपको कहा होगा कि नहीं-नहीं भाई ऐसा नहीं करते, अपनी university है, ऐसा क्यों करते हो? कितने-कितने लोगों ने आपको चलाया होगा।

सिर्फ Class Room के आपके Professor ने नहीं, आपके Dean ने नहीं, इस कैम्पस के अंदर भी कई लोगों ने आपको चलाया

होगा लेकिन अब, अब कोई नहीं होगा कि चलो भई Class का Time हो गया है। अब कोई नहीं होगा कि भई वो काम पूरा किया है कि नहीं किया है और आपको पूछने वाला कोई नहीं होगा और जब कोई पूछने वाला नहीं होता है, बताने वाला नहीं होता है तब हमारे जीवन की कसौटी प्रारंभ होती है, तब हमें ये बातें याद आती हैं। आप में से कोई अगर Teaching Profession में जाएगा और Class Room में जब बच्चों के साथ कुछ पढ़ाता होगा, कोई Student ऐसा सवाल पूछ लेगा और आपके बाल नोंच लेगा तब आपको ये Class Room याद आएगा यार, Teacher ने जब बताया था तो मैं तो पीछे बैठकर के मजाक कर रहा था, आज मेरी मजाक हो रही है। हर पल आपको यह याद आएगा। आखिरकर जीवन के किसी भी तबके पर पूछिए... अभी महबूबा जी अपने बचपन की गाथा यहां सुना रही थीं कि कैसे जिंदगी को गुजारा और वो पल कैसे याद आते हैं और उनका सपना भी है फिर से ऐसे पल मिल जाएं, ये क्यूं याद आते हैं क्योंकि ये जो Formalities way में जो पूंजी इकट्ठा की है, वो जीवन भर उसी से गुजारा करना है। कुछ लोग होंगे जो इसके आधार पर नया जुटाते जाएंगे लेकिन ज्यादातर वो होते हैं ठीक है यार, इतना मिल गया गाड़ी चला लो। हमारे देश में सदियों से दीक्षांत समारोह की परंपरा रही है। शायद पूरी मानव जात के इतिहास में सबसे पहला दीक्षांत समारोह वेदकाल में इसका जिक्र त्रतय उपनिषद् में आता है और उसमें पहली बार दीक्षांत समारोह की कल्पना को साकार किया गया है।

भारत में ये परंपरा हजारों वर्ष से संस्थागत बनी हुई है और एक प्रकार से दीक्षांत समारोह ये शिक्षा समारोह नहीं होता है और इसलिए मुझे आपको शिक्षा देने का हक नहीं बनता है। ये दीक्षांत समारोह है जो शिक्षा हमने पाई है, जो अर्जित किया है उसको समाज, जीवन को दीक्षा के लिए समर्पित करने के लिए लिए हमें कदम उठाने हैं, समाज के चरणों में रखने के लिए कदम उठाने हैं। ये देश विकास की नई ऊंचाइयों को छू रहा है। 800 Million Youth का देश जो 35 से कम Age Group का है, वो दुनिया में क्या-कुछ नहीं कर सकता है। हर नौजवान का सपना हिंदुस्तान की तरक्की का कारण बन सकता है। हम वो लोग हैं जिन्होंने उपनिषद् से लेकर के उपग्रह तक की यात्रा की है। उपनिषद् से उपग्रह तक की यात्रा करने वाले हम लोग हैं। हम वो लोग हैं जिन्होंने गुरुकुल से विश्वकुल तक अपने आप का विस्तार किया है, हम वो लोग हैं और भारत का नौजवान, जब Mars मिशन पर दुनिया कितने ही सालों से प्रयास कर रही थी।

हर किसी को कई बार Failure मिला, कई बार Failure मिला लेकिन ये हिंदुस्तान का नौजवान था, हिंदुस्तान की Talent थी कि पहले ही प्रयास में वो दुनिया में पहला देश बना, पहले ही प्रयास में Mars मिशन में सफल हुआ और हम लोग, हम गरीब देश के लोग हैं तो हम हमारी, सपने कितने ऊंचे नहीं होते, गरीबी में से रास्ता निकालना भी हम लोगों को आता है। Mars मिशन का खर्चा कितना हुआ, यहां से कटरा जाना है तो ऑटो रिक्शा में शायद 1 किलोमीटर का 10 रुपया लगता होगा लेकिन ये देश के वैज्ञानिकों की ताकत है, इस देश के Talent की ताकत देखिए कि Mars मिशन की यात्रा का खर्च 1 किलोमीटर का 7 रुपए से भी कम आया। इतना ही नहीं हॉलीवुड की जो फिल्में बनती हैं उससे कम खर्च में मेरे हिंदुस्तान का नौजवान Mars मिशन पर सफलतापूर्वक अपने कदम रखा सकता है। जिस देश के पास ये Talent हो, सामर्थ्य हो उस देश को सपने देखने का हक भी होता है, उस देश को विश्व को कुछ देने का मकसद भी होता है और उसी की पूर्ति के लिए अपने आप को सामर्थ्य बनाने का कर्तव्य भी होता है, उस कर्तव्य के पालन के लिए, हम आज जीवन को देश के लिए क्या करेंगे। उसे पाने का अगर प्रयास करते हैं तो आप देखिए जीवन का संतोष कई गुना बढ़ जाएगा। आप यहां से कई सपने लेकर के जा रहे हैं और खुद को कुछ बनाने के सपने गलते हैं, ऐसा मैं नहीं मानता हूं लेकिन कभी-कभार बनने के सपने निराशा के कारण भी बन जाते हैं। जो बनना चाहो और नहीं बन पाए तो जैसा मैंने प्रारंभ में कहा, वो बोझ बन जाता है लेकिन अगर कुछ करने का सपना होता है तो हर पल करने के बाद एक समाधान होता है, एक नई ऊर्जा प्राप्त होती है, एक नई गति मिलती है, एक नया लक्ष्य मिलता है, नया सिद्धांत, आदर्श मिल जाता है और जीवन को कसौटी पर कसने का एक इरादा बन जाता है और वही तो जिंदगी को आगे बढ़ाता है और इसलिए आज जब माता वैष्णो देवी के चरणों से शिक्षा-दीक्षा प्राप्त करके आप जा रहे हैं और माँ भी खुश होती होगी कि लड़कियों ने कमाल कर दिया है, हो सकता है कुछ दिनों के बाद आंदोलन चले पुरुषों के

आरक्षण का, वो भी कोई मांग लेकर के निकल पड़े कि इतने Gold Medal तो हमारे लिए रिजर्व होने चाहिए।

कल ही भारत की एक बेटी दीपिका ने हिंदुस्तान का नाम रोशन कर दिया। रियो के लिए उसका Selection हुआ और पहली बार एक बेटी जिमनास्टिक के लिए जा रही है। यही चीजें हैं जो देश में ताकत देती हैं। घटना एक इस कोने में और कहां त्रिपुरा, छोटा सा प्रदेश, कहां संसाधन होंगे, क्या संसाधन होने से वो रियो पहुंच रही है.... नहीं, संकल्प के कारण पहुंच रही है। भारत का झंडा ऊंचा करने का इरादा है इसलिए पहुंच रही है और इसलिए व्यवस्थाएं, सुविधाएं यही सब कुछ होती है जिंदगी में, ऐसा नहीं है। जीवन में जो लोग सफल हुए हैं, उनका इतिहास कहता है जिस अब्दुल कलाम जी ने एस University का प्रारंभ किया था, कभी अखबार बेचते थे और मिसाइल मैन के नाम से जाने गए। जरूरी नहीं है जिंदगी बनाने के लिए सुख, सुविधा, अवसर, व्यवस्था हों तभी होता है। हौसला बुलंद होना चाहिए अपने आप चीजें बन जाने लग जाती हैं और रास्ते भी निकल आते हैं। वो दशरथ मांझी की घटना कौन नहीं जानता है। बिहार का एक गरीब किसान, वो पढ़ा-लिखा नहीं था लेकिन उसका मन कर गया एक रास्ता बनाने का और उसने रास्ता बना दिया और उसने इतिहास बना दिया। वो सिर्फ रास्ता नहीं था मानवीय पुरुषार्थ का एक इतिहास उसने लिख दिया है और इसलिए जीवन में उसी चीजों का जो हिसाब लगाता रहता था, यार ऐसा होता तो अच्छा होता, ऐसा होता तो अच्छा होता तो शायद जिनके पास सब सुविधाएं हैं, उनको कुछ भी बनने में दिक्कत नहीं आती लेकिन देखा होगा आपने, जिनके पास सब कुछ है उनको विरासत में मिल गया, मिल गया बाकी ऐसे बहुत लोग होते हैं जिनके पास कुछ नहीं होता है वो अपना नई दुनिया खड़े कर देते हैं इसलिए अगर सबसे बड़ी संपत्ति है और 21वीं सदी जिसकी मोहताज है और वो है ज्ञानशक्ति और पूरे विश्व को 21वीं सदी में वो ही नेतृत्व करने वाला है जिसके पास ज्ञानशक्ति है और 21वीं सदी वो ज्ञान का युग है और भारत का इतिहास कहता है जब-जब मानव जात ज्ञान युग में प्रवेश किया है, भारत ने विश्व का नेतृत्व किया है। 21वीं सदी ज्ञान युग की सदी है।

भारत के पास विश्व का नेतृत्व करने के लिए ज्ञान का संकुल है और आप लोग हैं, जो उस ज्ञान के वाहक हैं, आप वो हैं जो ज्ञान को ऊर्जा के रूप में लेकर के राष्ट्र के लिए कुछ करने का सामर्थ्य रखते हैं और इसलिए इस दीक्षांत समारोह से अपने जीवन के लिए सोचते-सोचते, जिनके कारण मैं ये जीवन में कुछ पाया है, उनके लिए भी मैं कुछ सोचूंगा, कुछ करूंगा और जीवन का एक संतोष उसी से मिलेगा और जीवन में संतोष से बड़ी ताकत नहीं होती है। संतोष अपने आप में एक अंतर ऊर्जा है, उस अंतर ऊर्जा को हमें अपने आप में हमेशा संजोए रखना होता है। मुझे महबूबा जी की एक बात बहुत अच्छी लगी कि यहां के लोगों के लिए, हम वो लोग हैं जिनकी बातें हम दुनिया भर में पहुंचाने वाले हैं कि कितने प्यारे लोग हैं, कितनी महान परंपरा के लोग हैं, कितने उदार तरीके के लोग हैं, कैसे प्रकृति के साथ उन्होंने जीना सीखा दिया और एक एबंसेडर के रूप में मैं जम्मू-कश्मीर की इस महान धरती की बात, भारत के मुकुट मणि की बात मैं जहां जाऊं, कैसे पहुंचाऊं, इस University के माध्यम से मैं कर सकता हूं, उसके एक विद्यार्थी के नाम कर सकता हूं और यही ताकत लेकर के हम जाएं, हिंदुस्तान के अनेक राज्य यहां हैं। एक प्रकार ये University, इस सभागृह में मिनी हिंदुस्तान नजर आ रहा है। भारत के कई कोने होंगे जिसको पता नहीं होगा कि जम्मू-कश्मीर की धरती पर भी एक मिनी हिंदुस्तान अपने सपनों को संजो रहा है तब हर भारतीय के दिलों में कितना आनंद होगा कि जम्मू-कश्मीर की धरती पर भारत के भविष्य के लिए सपने संजोने वाले नौजवान मेरे सामने बैठे हैं, उनके लिए कितना आनंद होगा।

इस आनंद धारा को लेकर के हम चलें और सबका साथ, सबका विकास। साथ सबका चाहिए, विकास सबका होना चाहिए। ये संकल्प ही राष्ट्र को नई ऊंचाइयों पर ले जाता है और हम राष्ट्र को एक ऊंचाई पर ले जाने वाले एक व्यक्ति के रूप में, एक ऊर्जा के रूप में हम अपने जीवन में कुछ काम आए, उस सपनों को लेकर के चलें। मेरी इन सभी नौजवानों को हृदय से बहुत-बहुत शुभकामनाएं हैं, विशेषकर के जिन बेटियों ने आज पराक्रम दिखाया है उनको मैं लाख-लाख बधाईयां देता हूं, उनके मां-बाप को बधाई देता हूं। उन्होंने अपने बेटियों को पढ़ने के लिए यहां तक भेजा है। बेटी जब पढ़ती है तो बेटी का तो

योगदान है ही है लेकिन उस माँ का ज्यादा योगदान है, जो बेटी को पढ़ने के लिए खुद कष्ट उठाती है। वरना मां को तो करता होगा अच्छा होगा कि वो घर में है ताकि छोटे भाई के साथ थोड़ा उसको संभाल ले, अच्छा है घर में रहे ताकि मेहमान आए तो बर्तन साफ के काम आ जाए लेकिन वो मां होती है, जिसको अपने सुख के लिए नहीं बच्चों के सुख के लिए जीने का मन करता है तब मां बेटी को पढ़ने के लिए बाहर भेजती है। मैं उन माता को भी प्रणाम करता हूँ, जिन माता ने इन बेटियों को पढ़ाने के लिए आगे आई है, उन सबको मैं प्रणाम करते हुए आप सबको बहुत-बहुत शुभकामनाएं देता हूँ। धन्यवाद।

अतुल तिवारी / हिमांशु सिंह / मनीषा पांडे / मुस्तकीम खान

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

13-नवंबर-2016 22:55 IST

कर्नाटक लिंगायत एजुकेशन सोसाइटी के शताब्दी समारोह में प्रधानमंत्री के संबोधन का मूल पाठ, बेलगावी (कर्नाटक)

प्यारे भाइयो और बहनों,

मैं सबसे पहले उन सप्त ऋषियों को नमन करता हूँ। शिक्षक तो बहुत होते हैं। अच्छे शिक्षक होते हैं, उत्तम शिक्षक होते हैं, समर्पित शिक्षक होते हैं लेकिन शायद इतिहास में अमर शिक्षक शब्द का प्रयोग करना होगा तो इन सप्त ऋषियों के लिए अमल करना होगा। ऐसे शिक्षक 100 साल के बाद भी आज भी इस पीढ़ी को पढ़ा रहे हैं, शिक्षित कर रहे हैं। शायद इतिहास में कहीं पर भी ऐसी दुर्लभ घटना सुनने का सौभाग्य नहीं मिल सकता जो इस KLE society के द्वारा सिद्ध हुआ है।

मैं देख रहा हूँ मेरे सामने लाखों की तादाद में ये सारे नौजवान बैठे हैं। ये सब कुछ उन सप्त ऋषियों की तपस्या का परिणाम है। लोकमान्य तिलक जी से प्रेरणा ली। संत बसवेश्वर जी ने सामाजिक क्रान्तिकारी जो बिगुल बजाया था उस सामाजिक क्रान्तिकारी शिक्षा के माध्यम से न सिर्फ जन-जन तक पहुंचाना लेकिन पीढ़ी दर पीढ़ी पहुंचाना ये भगीरथ काम 100 साल पहले इस धरती पर हुआ। पूरे देश के लिए, शिक्षा में विश्वास करने वाले हर किसी के लिए ये गर्व का विषय है।

संस्थाएं बनती हैं, बिगड़ती हैं, बन्द भी हो जाती हैं लेकिन आप कल्पना करिए उन सात ऋषियों ने कैसी मजबूत नींव डाली होगी कि आज 100 साल के बाद भी ये फल रहा है, फूल रहा है और पूरे देश को प्रेरणा दे रहा है।

आज दुनिया के हर कोने में कोई न कोई तो होगा जो कहता होगा कि मैं KLE का विद्यार्थी था और दुनिया में भी जब किसी का इंटरव्यू होता होगा, नौकरी के लिए पूछताछ होती होगी, जब वो बताता होगा, सारे सर्टिफिकेट बताता होगा, अपने मार्क्स दिखाता होगा लेकिन जब वो कहता होगा कि साहब ये तो सब ठीक है, ये गुणांक, ये सर्टिफिकेट, ये मार्क्स, ये ग्रेड लेकिन मेरे पास सबसे बड़ी चीज है, मैं KLE का विद्यार्थी हूँ। और जिस पल इंटरव्यू लेने वाला भी देखता होगा कि अच्छा KLE अरे भई आओ, आओ।

100 साल कितनी पीढ़ियों ने तपस्या की होगी, कितने-कितने लोगों ने योगदान किया होगा। तब जाकर के ऐसी एक प्राणवान व्यवस्था का जन्म होता है और जो चलती है।

आज जब देश में शिक्षा के व्यापारिकीकरण की चर्चा हो रही है। बड़े-बड़े लोगों का भी मन करता है कि विद्या के व्यापार में जुड़ने से कुछ मुनाफा मिल जाएगा। ऐसे सब लोगों के लिए सबक है वो सप्त ऋषि। 100 साल पहले उनकी तनख्वाह कितनी होगी इन शिक्षकों की पगार शायद 30 रुपए, 35 रुपए 50 रुपए रही होगी। 100 साल पहले जिसकी 30 रुपए, 35 रुपए 50 रुपए पगार रही होगी, तनख्वाह मिली होगी उन्होंने समाज के लिए इतना बड़ा योगदान दे दिया। शिक्षा के क्षेत्र में सेवा करना चाहते हुए लोगों के लिए यह एक मिसाल है, प्रेरणा है।

भाइयो-बहनों, राजनीतिक दल भी 100 साल नहीं चल पाते हैं। कितने ही टुकड़े हो जाते हैं, परिवार भी नहीं बचते हैं। आप कल्पना कर सकते हैं कि 100 साल तक एक संस्था चलना, लगातार विकास होना, लोकतांत्रिक पद्धति से उसके management की रचना होना और जनता के ही पैसों से उसको आगे बढ़ाना, उसके भूतपूर्व विद्यार्थियों की मदद से उसको आगे बढ़ाना, ये अपने आप में पूरे देश के लिए एक बहुत बड़ी मिसाल है।

मैं खासकर के दिल्ली में जो बड़े हमारे विद्वान मित्र हैं, मीडिया के लोग हैं, उनसे मैं आज सार्वजनिक रूप से प्रार्थना करना चाहता हूँ कि किसी व्यक्तिके 60 साल हो जाए तो अखबारों में बहुत बढ़िया उनका article छप जाता है। किसी सरकार के 100 दिने हो जाए तो भी अखबार में बहुत बढ़िया article आ जाता है। किसी व्यक्तिके 75 साल हो जाए तो भी जय-जयकार होती है। अच्छा होगा, पूरे हिन्दुस्तान की मीडिया में इन सप्त ऋषियों ने जो काम किया है, इसकी शताब्दी के विषय में भी कुछ लिखा जाए और देश को पता चले। ये इसलिए चलना चाहिए कि देश के अलग-अलग कोने में भी जो शिक्षा को समर्पित लोग हैं, समाज को समर्पित लोग हैं, ऐसे लोगों को ऐसी घटना से प्रेरणा मिलती है, ताकत मिलती है और देश के और भी कोनों में ऐसा एक आंदोलन खड़ा हो सकता है।

भाइयो-बहनों, जब आजादी का आंदोलन चल रहा था तब महात्मा गांधी जी ने भी आजादी के सिपाही तैयार करने के लिए गुजरात विद्यापीठ नाम से शिक्षा संस्था को जन्म दिया था। लोकमान्य तिलक जी ने आजादी के सिपाही तैयार करने के लिए और राष्ट्र को अपनी ताकत पर खड़ा करने के लिए शिक्षा पर बल दिया था। 21वीं सदी में भी भारत को दुनिया में अगर अपना लोहा मनवाना है तो ये हमारी युवा पीढ़ी, उनका कौशल, उनकी शिक्षा वही मनवा सकती है।

भाइयो-बहनों, एक जमाना था जब भारत की पहचान दुनिया में क्या थी। ये तो सांप-सपेरे वाले लोग हैं, ये तो जादू-टोना करने वाले लोग हैं। सांप और चूहे से बाहर इनको कोई ज्ञान ही नहीं है, दुनिया में हिन्दुस्तान की ऐसी पहचान थी। लेकिन कुछ वर्षों से पहले भारत के 18-20 साल के नौजवान जब कंप्यूटर की की-बोर्ड पर अपनी उंगलियां घुमाने लगे, सारी दुनिया घूमने लगी, सोच बदलने लग गई। दुनिया को भारत के लिए सोचने का तरीका बदलना पड़ा, विश्व को मानना पड़ा कि भारत के पास अद्भुत शक्ति है, अद्भुत सामर्थ्य है और उसका मूलधार शिक्षा है। 100 साल में यहां के समाज जीवन में बदलाव लाने के लिए, शिक्षा के द्वारा पूरे कर्नाटक के जीवन को ताकत देने में और उसके द्वारा पूरे देश को ताकत देने में आपका बहुत बड़ा योगदान रहा है।

जब मैं पिछली बार आया तो हमारे प्रभाकर जी ने मुझे बताया कि 32 साल से लोग मुझे ये काम देते रहते हैं। ये छोटी बात नहीं है प्रभाकर जी। आपको मैं बधाई देता हूं, आपकी पूरी टीम को बधाई देता हूं। और लोकतांत्रिक पद्धति से होता है। इतनी सारी पीढ़ियों पर इतने लोगों ने काम किया होगा लेकिन संस्था का भला, शिक्षा का भला, विद्यार्थियों का भला, इसमें कोई compromise नहीं किया, ये अपने आप में बहुत बड़ी बात है। लेकिन आज जब मैं इस उत्तम कार्य को अपनी आंखों के सामने देख रहा हूं तो मेरा भी मन करता है कि मैं भी आज आपसे कुछ मांगकर के ही जाऊं। मांग सकता हूं न, मिलेगा?

आप कहोगे यार देश का ऐसा प्रधानमंत्री कैसा है, मांगने आया है। ये प्रधानमंत्री है ही ऐसा जी, वो जनता से मांगकर के गुजारा करता है। मैं आज आपसे कुछ मांगना चाहता हूं और मुझे विश्वास है, उन सप्त ऋषियों पर मेरा विश्वास है, आज की व्यवस्था पर विश्वास है, ये लाखों नौजवान मेरे सामने बैठे हैं उन पर मेरा विश्वास है, इसलिए मांगने की हिम्मत कर रहा हूं। मांगू? जरा आवाज जोर से आनी चाहिए, मांगू, सच में मांगू?

आप मुझे बताइए कि इस संस्था के पास सवा लाख विद्यार्थी, इतने सारे Institution चलते हैं क्या हमारा KLE ये संकल्प कर सकता है कि 2020 में जब टोक्यो में ओलंपिक होगा तो कुछ गोल्ड मेडल इस KLE के भी होंगे। कर सकते हो दोस्तों, कर सकते हो, संभव है दोस्तों, आपके लिए संभव है। मेरे प्यारे नौजवानों मैं ये भी चाहूंगा कि innovation, innovation विकास की जड़ी-बूटी है। अगर innovation नहीं होता है रिसर्च नहीं होती है तो जीवन में ठहराव आ जाता है और जो रिसर्च करते हैं वो आगे निकल जाते हैं। हम सिर्फ उनके product के लिए खरीददार बनकर रह जाते हैं। आपके पास मैंने पिछली बार आकर के देखा था। ऐसे उत्तम scientist हैं आपके पास, ऐसी उत्तम institutions हैं, ऐसे उत्तम technical knowledge वाले लोग हैं। हर वर्ष internationally recognized हो ऐसा कोई न कोई innovation मानव जातिके लिए KLE दे सकता है, क्या दोगे? पक्का दोगे?

तीसरी बात, भाइयो-बहनों आज दुनिया में जो पहली 100 उत्तम यूनिवर्सिटी है। उसमें हम नहीं हैं। शर्मिन्दगी महसूस होती है। भारत सरकार ने इस बजट में एक महत्वपूर्ण फैसला किया है। हमने कहा है कि सरकार की 10 यूनिवर्सिटी और 10 प्राइवेट यूनिवर्सिटी ये संकल्प करके आए कि हमें दुनिया की पहली 100 यूनिवर्सिटी में अपना स्थान बनाना है। जो इस काम के लिए आगे आना चाहते हैं उनको सरकार की तरफ से विशेष आर्थिक मदद दी जाएगी। जो इस काम को करने के लिए आना चाहते हैं उनको सरकारी बाबुओं के जो बंधन होते हैं किये permission, वो permission, ये नियम वो नियम, उसमें भी मुक्ति दी जाएगी, खुला मैदान दिया जाएगा। मैं निमंत्रित करता हूं देश की 10 प्राइवेट यूनिवर्सिटी को, मैं निमंत्रित करता हूं देशी की 10 सरकारी यूनिवर्सिटी को, हिम्मत करिए आइए। दुनिया में जो 100 पहली है, उनमें क्या है जो हमारे में नहीं है। हम करके दिखाए और देश तो मेरे, अब सिर्फ देश कल था और आज एक बढ़ गया, इतने से नहीं चलेगा, अब तो दुनिया में जो अच्छे से अच्छा है वहां पहुंचने का प्रयास होना, ये हिन्दुस्तान का सपना होना चाहिए। उसको लेकर के चलना चाहिए।

भाइयो-बहनों, आज मैं कर्नाटक की धरती पर आया हूं और टीवी के माध्यम से देश भी मेरी बात को सुन रहा है। तो मैं एक और विषय की भी चर्चा करना चाहता हूं। करूं, आप सुनना चाहते हैं। 08 तारीख रात को 8 बजे आपने देखा। 2012, 2013, 2014 अखबारों में खबरें आती थी कि कोयले में इतने लाख करोड़ खा गए। 2जी स्कैम में इतने लाख करोड़ खा गए और 08 तारीख के बाद आपने उनका हाल देखा। 4000 रुपए के लिए कतार में खड़ा रहना पड़ा। मेरे प्यारे देशवासियों, ये सरकार ईमानदार इंसान को परेशान करना नहीं चाहती लेकिन मेरे प्यारे भाइयो-बहनों बेईमान को छोड़ना भी नहीं है। 17 साल हो गए। आप मुझे बताइए देश को लूटा गया है कि नहीं लूटा गया है। भ्रष्टाचार हुआ है कि नहीं हुआ है। बड़ी-बड़ी नोटों के ठप्पे घर पर लगे हैं कि नहीं लगे हैं। मैं हैरान हूं कि हमारे कांग्रेस के लोग कह रहे हैं कि आपने 1000 के नोट बंद क्यों

कर दिए, 500 के नोट बंद क्यों कर दिए। भई आपने जब चवन्नी बंद की थी तो मैंने पूछा था। आपको मालूम है कांग्रेस पार्टी ने चवन्नी बंद की थी। इस देश ने तो कोई चिल्लाहट नहीं की। ठीक है आपकी ताकत उतनी थी। बंद करने में तो आप भी सहमत थे लेकिन बड़े नोट बंद करने की आपकी ताकत नहीं थी। चवन्नी से गाड़ी चलानी थी और जो लोग आज मुझे सवाल पूछते हैं किमोदी ने 1000 के नोट का जादू किया है।

भाइयो-बहनों, जो लोग मेरा भाषण सुनते हैं, मेरी बातें सुनते हैं। ये बात मैं पहली बार नहीं बोला हूँ। पांच साल पहले सार्वजनिक सभा में मैंने कहा था कि कांग्रेस पार्टी में दम नहीं है, चवन्नी बंद कर रही है। मेरा चले तो मैं 1000 के नोट बंद कर दूँ। आज भी उसका वीडियो कहीं चलता होगा, देख सकते हैं आप लोग।

भाइयो-बहनों, मैंने देश के साथ कुछ छुपाया नहीं है। मैंने पहले ही दिन, मेरे प्यारे भाइयो-बहनों अगर मैं झूठ बोलूँ तो आपको मुझ पर गुस्सा करने का पूरा हक देता हूँ। मैंने पहले ही दिन कहा था कि इस काम के लिए मुझे 50 दिन दीजिए, 30 दिसम्बर तक का समय दीजिए। कहा था कि नहीं कहा था। मैंने पहले ही दिन कहा था कि 30 दिसम्बर तक थोड़ी तकलीफ रहेगी, कहा था कि नहीं कहा था। भाइयो-बहनों, मैंने देश को विश्वास में लेकर के काम किया है। देश में ईमानदारी, करोड़ों लोग हैं जो ईमानदारी के लिए जीते हैं, ईमानदारी के कारण सहते हैं। आप मुझे बताइए किसरकार का ईमानदारों की रक्षा करने का काम है कि नहीं है। ईमानदारों की रक्षा होनी चाहिए कि नहीं होनी चाहिए। और अगर बेईमानों को सजा देने के लिए 50 दिन थोड़ी तकलीफ रहेगी तो आप मेरी मदद करोगे कि नहीं करोगे। दोनों हाथ ऊपर करके बताओ भाइयो और बहनों। तालियों की गड़गड़ाहट से बताइए, ये देश देख रहा है हर हिन्दुस्तान का नौजवान, हर हिन्दुस्तानी। ये दृश्य देख लीजिए, जिनको शक है। एयरकंडीशन कमरे में बैठ करके बेईमानों की वकालत करने वाले देख लीजिए, जनता-जनार्दन क्या चाहती है।

भाइयो-बहनों, हम जानते हैं हमारे देश में चुनाव होता है। मतदाता सूची, ये तो कोई secret काम नहीं है। नोट प्रतिबंध करना तो मेरे लिए बहुत जरूरी था कि वो secret रहे। अगर वो लीक हो जाता तो ये बेईमान लोगों की ताकत ऐसी है कि कहीं पर भी जाकर अपना काम कर लेते। देश खुश है। 08 तारीख को हिन्दुस्तान का गरीब चैन से सो रहा था और अमीर नींद की गोलियां खरीदने के लिए बाजार गया पर कोई देने वाला नहीं था।

भाइयो-बहनों, चुनाव में मतदाता सूची बनती है, कोई secret नहीं होता। सरकार लगती है, टीचर लगते हैं आशा worker लगते हैं, सारी सरकार लग जाती है। हर पार्टी के worker कभी लग जाते हैं। उसके बावजूद भी जिस दिन मतदान होता है, शिकायत आती है कि नहीं आती है। मेरा नाम रह गया, मेरे मोहल्ले का नाम रह गया, मेरे परिवार का नाम रह गया, मेरी सोसायटी का नाम रह गया, बताइए ये तकलीफ आती है कि नहीं आती है। इतना बड़ा काम खुला चलता है तो भी कुछ न कुछ कमी रह जाती है कि नहीं रह जाती है। आप देखिए हिन्दुस्तान का जब चुनाव होता है पूरे देश का, करीब-करीब तीन महीने चलता है। 90 दिन तक सारा कारोबार ठप्प हो जाता है। सारे अफसर, हर किसी को चुनाव का ही काम करना पड़ता है। किसी भी department में क्यों न हो। भाइयो-बहनों, चुनाव में सरकार की इतनी ताकत लगती है, पॉलिटिकल पार्टियों की लगती है, मीडिया की मदद मिलती है तो भी 60-70 प्रतिशत मतदान होता है और 90 दिन तक गाड़ी चलती है। मेरे प्यारे देशवासियों, मैंने तो आपसे सिर्फ 50 दिवस मांगा है। मेरे भाइयो देश के लिए मांगा है।

भाइयो-बहनों आपने देखा होगा कि इस बार बजट में हमने एक योजना की थी। जो लोग मेरे 'मन की बात' सुनते हैं, उसमें भी मैंने कहा था कि भ्रष्टाचार से लड़ाई लड़ने का एक उपाय है cashless society. ये नकदी नोट रुपए देने वाला कारोबार धीरे-धीरे कम होना चाहिए। क्रेडिट कार्ड, डेबिट कार्ड, प्लास्टिक करेंसी, इस पर जाना चाहिए। इसलिए भारत सरकार ने अपने बजट में क्रेडिट कार्ड, डेबिट कार्ड के ऊपर टैक्स लगता था, वो टैक्स हमने हटाया था और सरकारी विभागों को कहा था कि आप भी इसको कम कीजिए या हटाइए। कई विभागों ने कम भी किया है और कुछ विभागों ने हटाया भी है। ये इसलिए किया कि मुझे आज ये करना था। मैंने जब प्रधानमंत्री जन-धन account खोले, गरीबों के खाते खोले उसके साथ उनको एक क्रेडिट कार्ड दिया है, डेबिट कार्ड दिया है, रुपये कार्ड। 20 करोड़ लोगों को दिया है ताकि धीरे-धीरे गरीब आदमी को भी उस कार्ड के द्वारा अपना कारोबार कराने की आदत लग जाए धीरे-धीरे। समय लगेगा लेकिन ये काम दो साल पहले किया है भाइयो। मैंने अचानक नहीं किया है। ये बात सही है कि बीमारी इतनी गहरी है। इतनी 70 साल की पुरानी बीमारी है भई और हर किसी को ये बीमारी लग गई है। भाइयो-बहनों, मैं दवाइयों का dose बढ़ा रहा था, पहल एक dose देता था फिर दूसरा dose दिया, अभी जरा बड़ा dose दिया है और बेईमान लोग और बेईमान लोगों की रक्षा करने वाले लोग, ये भी कान खोलकर के सुन ले कि 30 दिसंबर के बाद मोदी अटकने वाला नहीं है। जो लोग गंगा जी में चवन्नी नहीं डालते थे आज वो नोट डाल रहे हैं। मैं एक दिन देख रहा था कि कूड़ा-कचरा साफ करने वाली एक महिला, कहते हैं कि कि 57,000 रुपए उसको कूड़े-कचरे में मिला वो बेचारी पुलिस थाने में जमा करवाने चली गई कि साहब इतने रुपए मिले हैं। मैं अभी आया तो यहां स्वागत में मेरे प्रभाकर जी ने लोगों पर फूल की पंखुड़ियां डाल रहे थे। मैंने कहा वो दिन दूर नहीं होगा जब कोई नेता आएंगे तो लोग 1000-1000 के नोटों की कतरन करके डालेंगे।

भाइयो-बहनों, सफाई करना जरूरी है और इसलिए मुझे आपकी मदद चाहिए। तकलीफ पड़ेगी, मैंने ये कभी नहीं कहा था कि तकलीफ नहीं पड़ेगी। मेरी पूरी कोशिश हो। आप देखिए जी, मैं कल देख रहा था कि बैंकों में बैंक के कर्मचारियों ने एक साल में जितना काम करते हैं न, उससे ज्यादा काम ये दिनों में किया है। हम सब सभी बैंक के कर्मचारियों के लिए तालियां बजाए। इतना अच्छा काम कर रहे हैं आज बैंक के लोग हमारे। उनका अभिनंदन करे।

मैंने देखा कि 75 साल की उम्र के, 70 साल की उम्र के, 60 साल की उम्र के जो बैंक में से रिटायर्ड हुए हैं ऐसे लोग बैंकों में गए। उन्होंने कहा कि साहब इस समय में मुफ्त में भी हमारी सेवा चाहिए तो हम काम करने के लिए तैयार हैं, हमारे पास बैंक का अनुभव है। देश में ऐसा हुआ है। मैंने ऐसे नौजवान देखे जो कतार में senior citizen खड़े थे उनके लिए अपने घर से कुर्सियां उठाकर के लाए, उनके बैठने की व्यवस्था की। मैंने ऐसी माताएं-बहनें देखी जो कतार में खड़े हुए लोगों को घर से लाकर के पानी पिला रही हैं। भाइयो-बहनों सिनेमा थियेटर के बाहर टिकट लेने के लिए कभी-कभी झगड़ा हो जाता है। इतना बड़ा हिन्दुस्तान शान्ति से कतार में खड़ा है और अपने नंबर का इंतजार कर रहा है। देश बेईमानी से थक चुका है।

भाइयो-बहनों pain है, मैं मानता हूं मेरे इस निर्णय के कारण pain है लेकिन देश को gain ज्यादा है। और मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि मैं आपके साथ खड़ा रहूंगा। मैं ईमानदार लोगों से कहना चाहता हूं कि आप किसी बेईमान को अपनी 500 या 1000 की कमाई का नोट जल्दबाजी में मत दीजिए। 30 दिसंबर तक आपके पास समय है। कोई 400 में लेने वाला निकल जाएगा, कोई 800 में 1000 की नोट लेने वाला निकल जाएगा। आपके 500 रुपए मतलब कि four hundred ninety nine and hundred paise पूरा का पूरा 500 का आपका हक है और सरकार आपको देने के लिए बंधी हुई है। 1000 का आपका ईमानदारी का नोट आपका हक है। सरकार बंधी हुई है। 30 दिसंबर तक ये प्रक्रिया चलने वाली है। प्रक्रिया संतोषजनक होने वाली है। हो सकता है कुछ गंगा में बहा देंगे, कुछ कूड़े-कचरे में डाल देंगे, कतरन बना देंगे। खुद तो शायद बच जाएंगे नोट जाएंगे उसके, 200 करोड़-400 करोड़ जाएंगे। लेकिन कोई दूसरे रास्ते से। बैंक में जमा करके ईमानदारी का खेल करने गया तो देश आजाद हुआ तब से अब तक का सारा चिट्ठा खोलकर के रख दूंगा। 200% लगने वाले पर 200% दंड लगाऊंगा। बहुत लूटा है।

मेरे प्यारे देशवासियों, लूटने वालों को आपने देख लिया है। 70 साल देश लूटा गया है, मुझे 70 महीने दीजिए मैं देश को साफ करके रख दूंगा। मोदी ने क्या किया। जरा 08 तारीख रात 8 बजे का टीवी खोलकर के देख लो कि मोदी ने क्या किया।

मेरे प्यारे देशवासियों, मेरे कर्नाटक के भाइयो-बहनों और इसमें ज्यादातर गांव के लोग हैं, मेरी आपसे एक प्रार्थना है किये जो मैं पवित्र काम करने निकला हूं, देश में ईमानदारी के लिए निकला हूं। अगर आपको मेरे ईमान पर भरोसा है, अगर आपको मेरे काम में भरोसा है। ये जो नोटों की सफाई का मैंने अभियान चलाया है। अगर आपको मेरी बात पर भरोसा है मुझे आपका आशीर्वाद चाहिए। आपसे मेरी विनती है कि अपनी जगह पर खड़े होकर के दोनों हाथ से ताली बजाकर के मुझे आशीर्वाद दीजिए। ये ईमान और पवित्रता के काम को मैं आप सब से प्रार्थना करता हूं कि आप खड़े होकर के ताली बजाकर के ये एयरकंडीशन कमरों में बैठ करके दिन-रात हमारे बाल नोंचने वालों, ये गांव के लोग हैं, ये पढ़े-लिखे लोग हैं। ये ईमानदारी के लिए कष्ट झेलने वाले लोग हैं। ये मुझे आशीर्वाद दे रहे हैं। ये आपका आशीर्वाद देश में सफाई करके रहेगा। मैं आपका बहुत-बहुत आभारी हूं। मैं आपका बहुत-बहुत धन्यवाद करता हूं। मेरे लिए खुशी की बात है। आम तौर पर पत्रकार लोग अपनी कुर्सी पर से खड़े नहीं होते हैं। मैं आज देख रहा हूं कि पत्रकार भी खड़े हो गए। मैं आज सौ सलाम करता हूं, इन पत्रकारों को मैं आज सौ सलाम करता हूं। बहुत बड़ी बात की है जी। मैं बहुत आभार व्यक्त करता हूं, बहुत-बहुत धन्यवाद।

अतुल कुमार तिवारी/ हिमांशु सिंह/ मनीषा